NEHRU
BAL PUSTAKALAYA

परियों का खेल

स्वप्ना दत्ता

चित्रांकन

गीता वढेरा

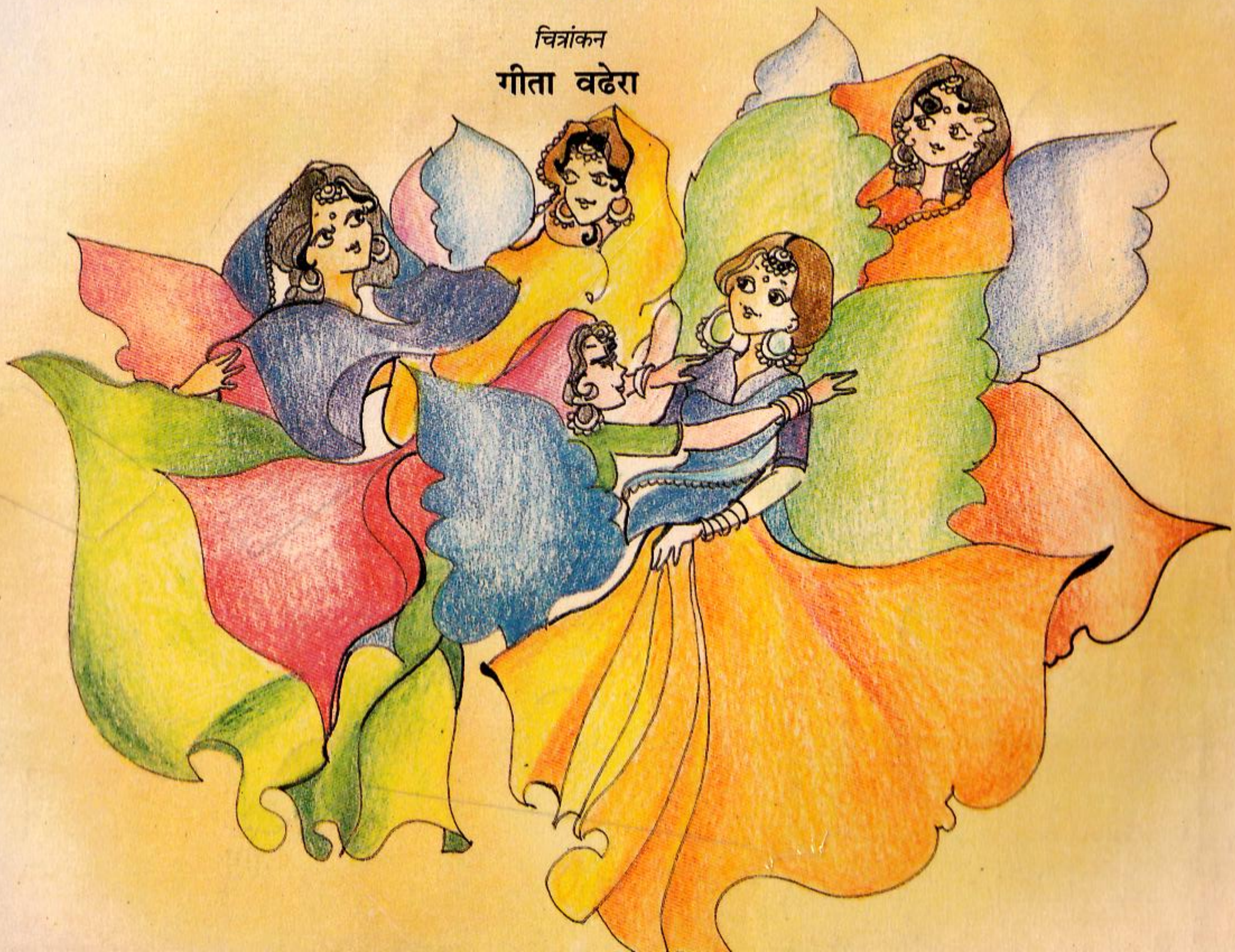

नेहरू बाल पुस्तकालय

परियों का खेल

स्वप्ना दत्ता

चित्रांकन

गीता वढेरा

अनुवाद

पृथ्वीराज मोंगा

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

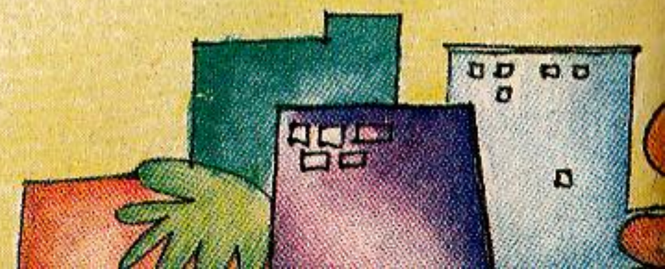

7829

बहुत पहले सूरज पर कुछ परियां रहती थीं। उन्हें सूरज की परियां कहा जाता था। सुबह जब सूरज उदय होता तो वह अपनी किरणों को हर तरफ बिखेर देता। कुछ किरणें पृथ्वी पर भी पड़तीं।

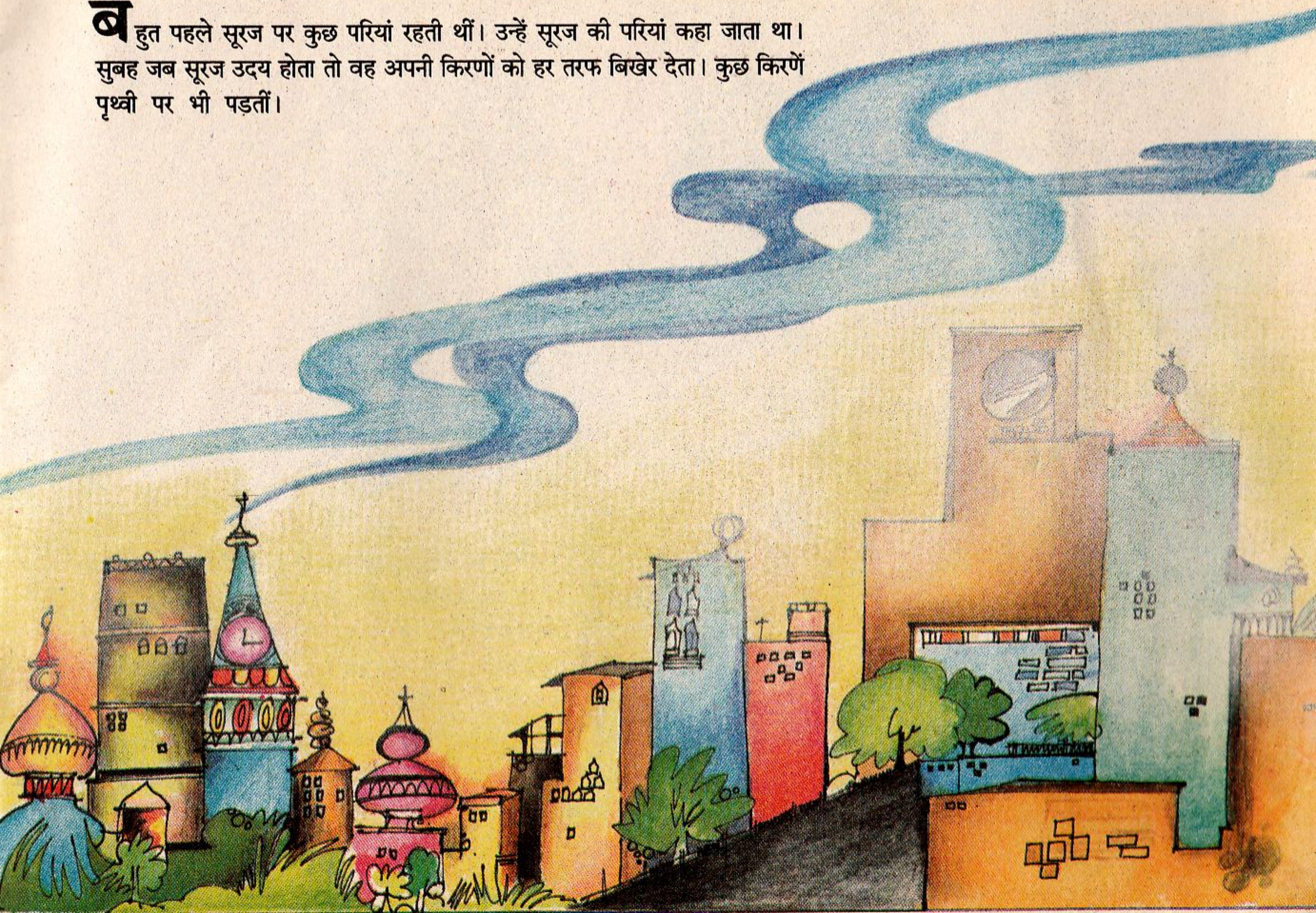

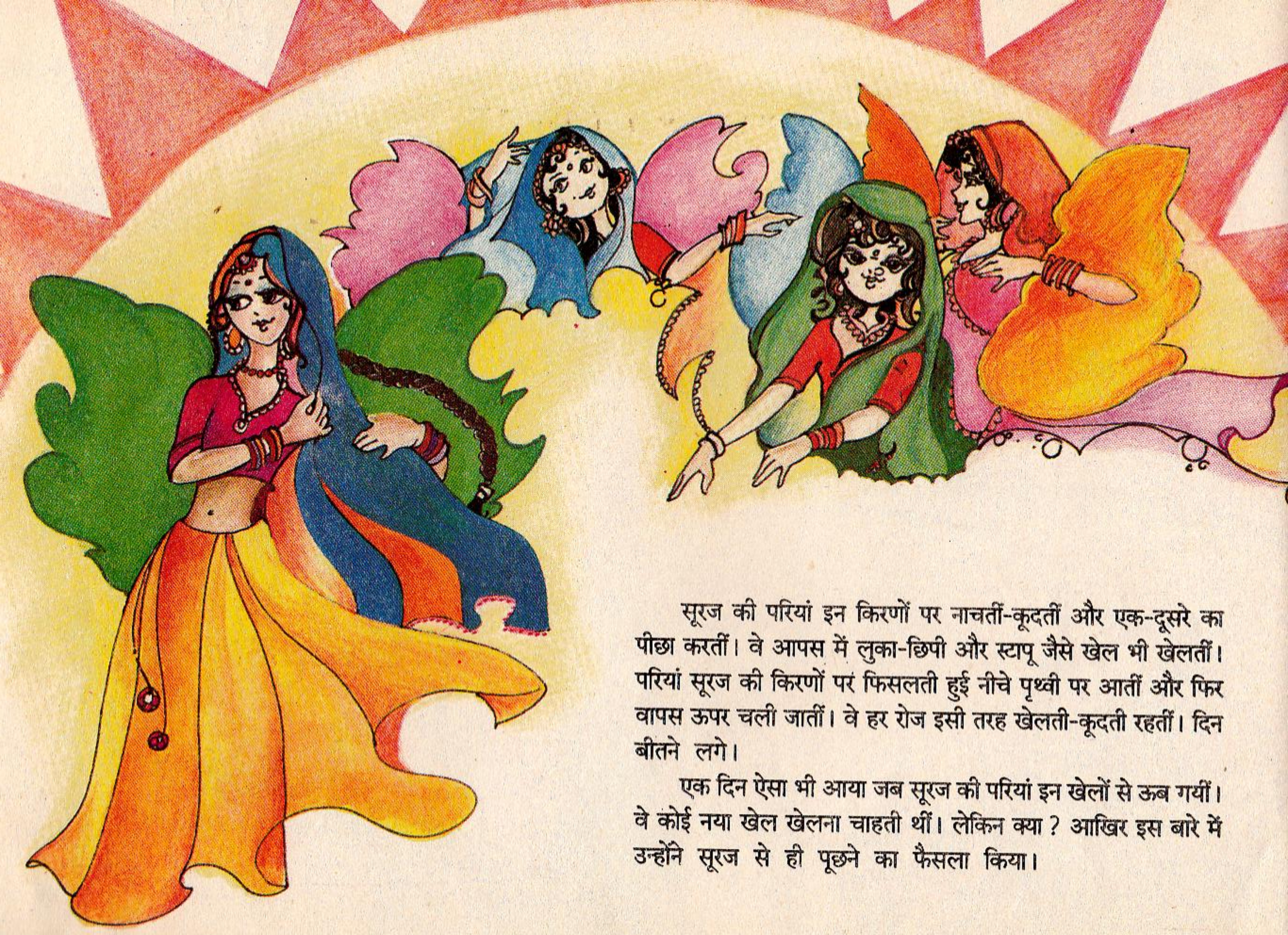

सूरज की परियां इन किरणों पर नाचतीं-कूदतीं और एक-दूसरे का पीछा करतीं। वे आपस में लुका-छिपी और स्टापू जैसे खेल भी खेलतीं। परियां सूरज की किरणों पर फिसलती हुई नीचे पृथ्वी पर आतीं और फिर वापस ऊपर चली जातीं। वे हर रोज इसी तरह खेलती-कूदती रहतीं। दिन बीतने लगे।

एक दिन ऐसा भी आया जब सूरज की परियां इन खेलों से ऊब गयीं। वे कोई नया खेल खेलना चाहती थीं। लेकिन क्या ? आखिर इस बारे में उन्होंने सूरज से ही पूछने का फैसला किया।

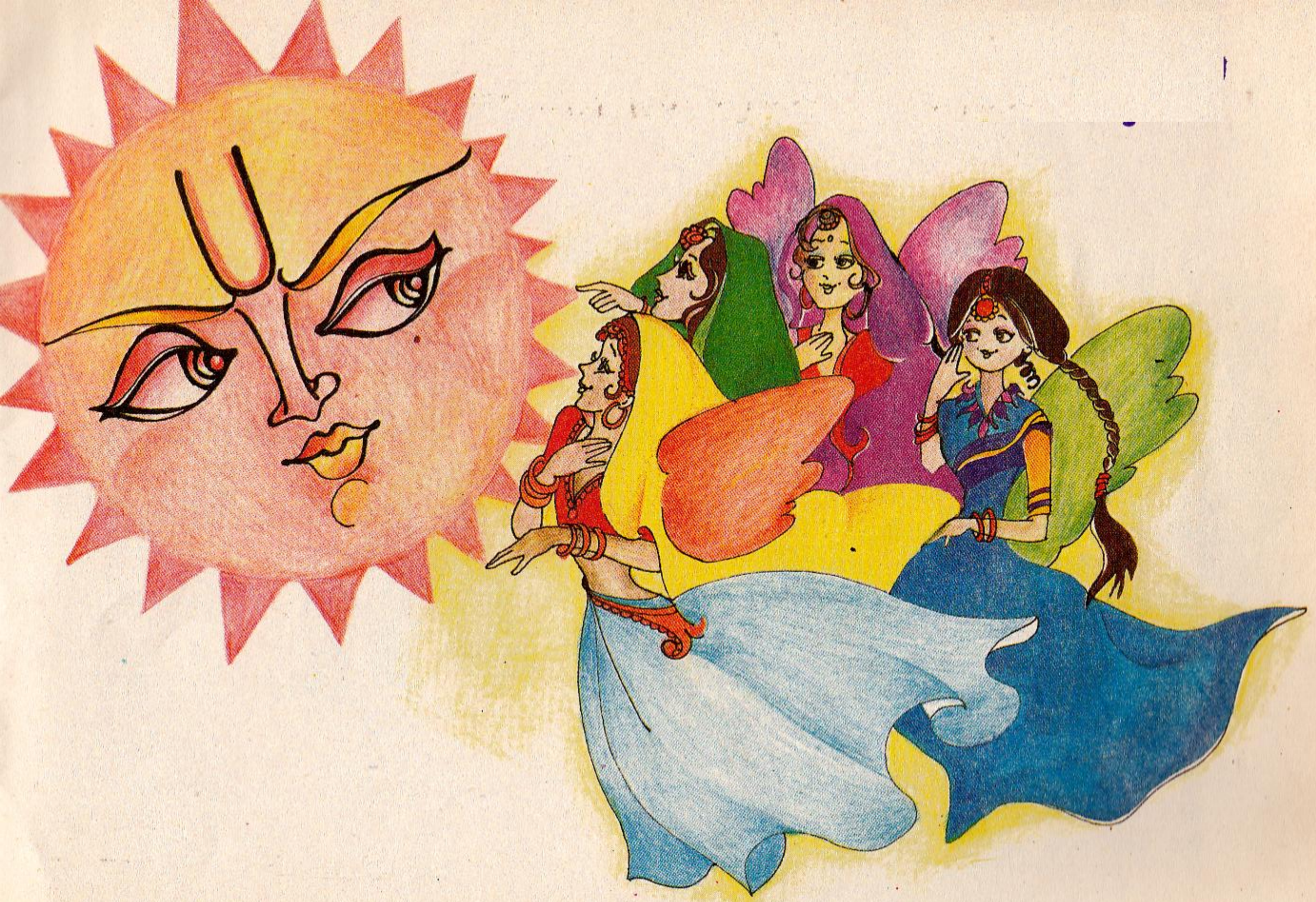

सूरज ने कहा, "आसमान को देखो। यह कितना खाली और सूना लगता है! तुम सब आसमान में एक महल क्यों नहीं बनातीं?"

"महल? आसमान में?" परियां हैरानी से कह उठीं। "मगर हम महल बनाएं किस चीज का?"

"नीचे पृथ्वी पर जाओ और वहां कोई चीज तलाश करो।" सूरज ने कहा।

सूरज की परियां किरणों पर फिसलकर नीचे पृथ्वी पर आ गयीं।

"यह खेल बड़ा ही मजेदार है!" एक परी ने कहा।

"आसमान में महल बनाने में मुझे भी बड़ा मजा आयेगा।" दूसरी परी बोली।

"लेकिन हम महल बनायेंगी किस चीज का?" तीसरी परी ने पूछा। "महल बनाने के लिए पृथ्वी पर है क्या?"

"कुछ भी तो नहीं। सिर्फ पथरीली चट्टानें और सूखी रेत, बस!"

"और नमकीन पानी वाला सागर!"

"आओ, देखें तो सही", एक अन्य परी ने कहा। "क्या पता, हम रेत का महल बनाने में सफल हो जायें। और शायद पानी का भी।"

परियां थोड़ी-थोड़ी रेत अपने हाथों में उठाकर हवा में उड़ चलीं।

"आओ, पहले फर्श बनायें", एक परी ने कहा। "तुम सारी रेत को यहां डाल दो।"

पर रेत तो आसमान में टिकी नहीं रह सकती थी। सर्र....सर्र! सारी रेत वापस धरती पर गिर गयी। आसमान में जरा सी भी रेत नहीं बची।

"ओह!" परियां चिल्लाने लगीं। "रेत बहुत भारी है। यह आसमान में नहीं टिकी रह सकती। अब हम क्या करें?"

"पानी लाने की कोशिश करें", उनमें से एक बोली। इसके साथ ही वे सागर के पानी को अपनी हथेलियों में ले उड़ीं। टप... टप... सर्र...! लेकिन पानी भी पृथ्वी पर गिर गया।

"अब बताओ क्या करें?" एक परी ने पूछा।

"और किसी चीज की तलाश करें।" बाकी परियों ने जवाब दिया। "हमें ऐसी कोई न कोई चीज जरूर खोज निकालनी चाहिए, जो आसमान में टिकी रह सके।"

"चलो, फिर किसी हल्की और रूई जैसी चीज की तलाश करें।" एक परी ने सलाह दी।

वे सब आसपास तलाश करने लगीं। चट्टानें बड़ी पथरीली थीं, धूल बड़ी हल्की थी। तब उन्होंने चीजों को मिलाने की कोशिश की। कई बार की कोशिश के बाद और बार-बार परखने पर उन्होंने एक हल्का और रोयेंदार मिश्रण तैयार किया। इसमें थोड़ी सी हवा, थोड़ा सा पानी और थोड़ी सी धूल मिलायी गयी। वह बड़ा ही हल्का था। नीचे गिरने की बजाय वह हवा में तैरने लगा।

"हमने बना लिया... हमने बना लिया...।" परियां खुशी से चिल्ला उठीं।
"इस प्यारी-प्यारी रोयेंदार चीज के साथ हम अपना महल बनायेंगी।"

"हम इस चीज का नाम क्या रखें?" उन्होंने सूरज से पूछा।

"तुम इसे बादल कह सकती हो।" सूरज ने जवाब दिया। "इस चीज को बनाकर तुम सबने बड़ी समझदारी दिखायी है।"

सूरज की परियां काम में जुट गयीं। वे सारा दिन बादल बनाती रहीं। बादल, और बादल। अब आकाश खाली और सूना नहीं था। परियों ने बादलों के महल बनाये, बादलों के पहाड़ बनाये, बादलों के जंगल बनाये, बादलों के बाग-बगीचे बनाये। आखिर उन्होंने बादलों का एक पूरा शहर ही बना दिया।

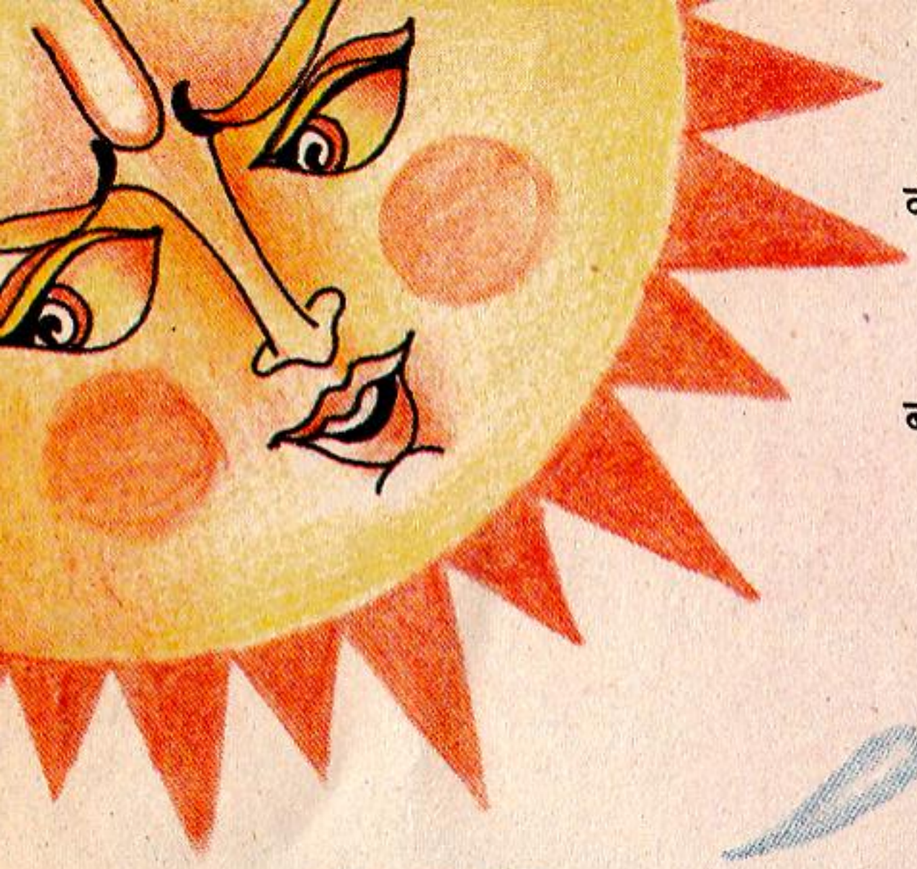

"ज्यादा लालची मत बनो," सूरज ने चेतावनी दी। "आसमान बस इतने ही बादलों को अपने में समा सकता है।"

"और पानी मत लो, वरना हम सूख जायेंगे।" सागरों ने शिकायत करते हुए कहा।

लेकिन सूरज की परियों ने किसी की एक न सुनी। वे ज्यादा, और ज्यादा बादल बनाने में जुटी रहीं।

7829

"हम इन्हें कैसे रोकें?" बादलों ने एक-दूसरे से पूछा।

"उन्हें हमारी बात सुननी ही होगी।"

"उन्हें हमारी बात समझनी ही होगी।"

"पर कैसे?"

बादल एक-दूसरे के पास जुट आये। आसमान में एक से दूसरी ओर तक बिजली चमक उठी और गरजने की जोरदार आवाज हुई। "बस करो! बस करो!" सारे बादल चिल्लाने लगे।

लेकिन सूरज की परियों ने उनकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया। वे लगातार बादल बनाती रहीं।

"हम इतने भारी हो चुके हैं कि उड़ते रहना मुश्किल है।" बादल चिल्ला उठे। हमें पृथ्वी पर जाना ही होगा। टप... टप... टप... टप.....। वे पानी की बिल्कुल पतली और लंबी धाराओं के रूप में पृथ्वी पर गिरने लगे। बाद में उन्होंने बरसात का रूप ले लिया।

"रुको! रुक जाओ!" सूरज की परियां चिल्ला उठीं। "नीचे मत गिरो। हमारा बादलों का बसा-बसाया शहर उजड़ जायेगा।"

"हम कुछ नहीं कर सकतीं।" बरसात की बूंदें गाने लगीं। "हमारा वजन बहुत ज्यादा है। हमें नीचे गिरना ही होगा।"

"हां, मैं चाहती हूं कि ये वापस लौट आयें," पृथ्वी ने ऊंचे स्वर में कहा। "तुम मेरा सारा पानी ले जा चुकी हो। मुझे अपना पानी वापस चाहिए।"

"देखो, देखो।" सूरज की परियां चिल्लाने लगीं। "हमारे सारे बादल पिघल रहे हैं। हमारे महल पिघल गये हैं। हमारे पहाड़ पिघल गये हैं। हमारे जंगल पिघल गये हैं। हमारे बाग-बगीचे पिघल गये हैं। बस, देखते ही देखते बादलों का पूरा शहर पिघलकर खत्म हो जायेगा। हमें क्या करना चाहिए?"

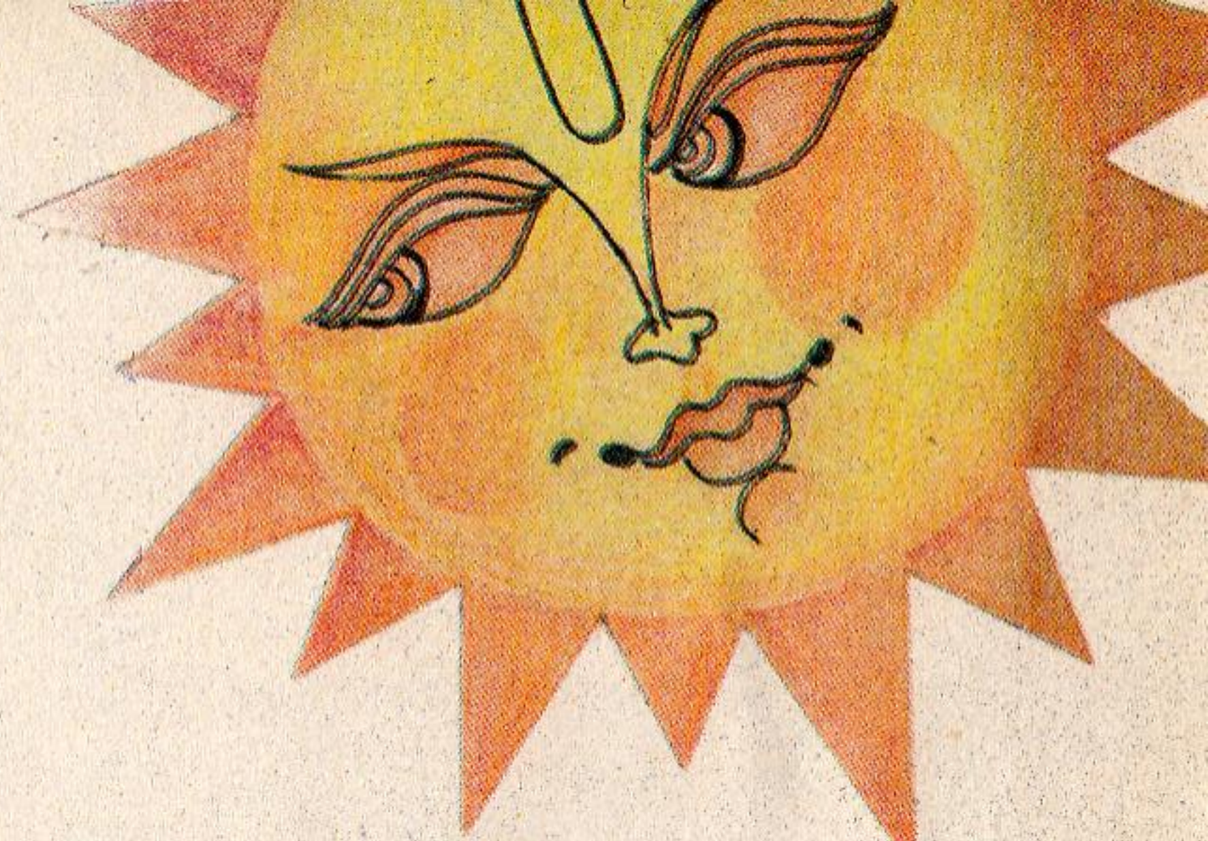

वे भागकर सूरज के पास पहुंचीं और सूरज को सारी बात कह सुनायी। "मैंने तुमसे कहा था न कि ज्यादा लालची मत बनो। कहा था या नहीं?" सूरज ने पूछा।

"अब.... हम क्या करें?" परियों ने पूछा।

"क्या करो? वह सारा काम तुम्हें दुबारा से करना होगा।"

रु. 9.00 ISBN 81-237-0581-6

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया